Vol 6 Issue 11 August 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Awadhesh Kumar Shirotriya

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 5.2331(UIF) Volume - 6 | Issue - 11 | august - 2017

Review Of Research

सिनेमाई जनसंचार का ऐतिहासिक व सामाजिक परिप्रेक्ष्य

रणजीत कुमार
शोध सहायक
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)

सारांश :

आधुनिक युग में जनसंचार माध्यम के रूप अनेक नवीन तकनीक से युक्त साधनों का अविष्कार हुआ लेकिन सिनेमा की प्रासंगिकता बनी रही। सिनेमा जनसंचार का एक ऐसा माध्यम है जिससे हर कोई प्रभावित है। दृश्य–श्रव्य माध्यम होने के कारण यह किसी विशेष समुदाय अथवा वर्ग तक सीमित नहीं है। इसके प्रभाव के जद में साक्षर और निरक्षर दोनों वर्ग हैं।

शोध केंद्रित शब्द : सिनेमा, जनसंचार, जनसंचार माध्यम ।

शोध प्रविधि :

सिनेमाई जनसंचार का ऐतिहासिक व सामाजिक परिप्रेक्ष्य को प्रस्तुत करने के लिए वर्णनात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है। यह पूर्णतया द्वितीयक स्रोत पर आधारित है।

शोध का महत्व : सिनेमा के जादुई छवि से हर कोई परिचित है। इसने अपने आरंभ से ही लोगों को आकर्षित किया है। भले ही सिनेमा को मनोरंजन का एक महत्वपूर्ण साधन माना गया है लेकिन यह संदेश भी देता है। सिनेमा द्वारा दिए गए सूचना का दर्शकों पर तात्कालिक प्रभाव पड़ता है। इस प्रभाव को विभिन्न फिल्मों के माध्यम से दर्शाना एक महत्वपूर्ण कार्य है।

उद्देश्य : सिनेमा की आरंभिक स्थिति को दर्शाते हुए उसके विकास के साथ समाज को संदेश देने अथवा सूचित करने की प्रवृति का अध्ययन करना इस शोध का उद्देश्य है।

उपकल्पना : सिनेमा जनसंचार का एक सशक्त माध्यम है।

शोध की सीमाएं : प्रस्तुत शोध में केवल हिंदी सिनेमा और इसके सकारात्मक पक्ष को रखा गया है।

प्रस्ताना :

सिनेमा आरंभ से ही लोगों के लिए कौतुहल का विषय रहा। फ्रांस के ऑगस्ट मेरी लुइस निकोलस और लुइस जीन लुमिएर ने पेरिस में सन 1895 में पहले चलचित्र का प्रदर्शन किया तो दुनिया के लिए यह एक ऐतिहासिक दिन था। मूक से लेकर सवाक और श्वेत श्याम से लेकर रंगीन तथा सामान्य से लेकर डिजिटल बनने तक के सफर में सिनेमा हर दौर में लोकप्रिय रहा। सिनेमा मनोरंजन के साथ–साथ सूचना देने और जनमत निर्माण करने का भी प्रभावशाली साधन है। यही कारण है कि जनसंचार माध्यम के रूप में सिनेमा का प्रभाव सबसे सशक्त है। इस संदर्भ में प्रो. रमेश जैन का कहना है–"फिल्म या सिनेमा जनसंचार का एक सशक्त और प्रभावकारी माध्यम है। फिल्म श्रव्य–दृश्य माध्यम है। इसमें संचार की प्रक्रिया तात्कालिक होती है। यह माध्यम विश्वसनीय और व्यापक है।"[1] यह सर्वविदित है कि जनसंचार के क्षेत्र में सिनेमा का प्रभाव तात्कालिक ही होता है। तभी इसे जनसंचार का प्रभावशाली साधन माना गया है।

संचार माध्यमों में सिनेमा दृश्य–श्रव्य माध्यम के रूप में स्थापित है। इसकी यह विशेषता इसे लोकप्रिय बनाती है। सिनेमा के माध्यम से दी गई सूचना अथवा संदेश आसानी से और प्रभावकारी रूप में ग्रहण किया जाता है। क्योंकि इसमें अभिनय, संगीत, नृत्य व अनेक तकनीकी और मानवीय कलात्मक भाव समाहित होते हैं। सिनेमा के ये सभी पक्ष इसे विशिष्ट बनाते हैं। आधुनिक युग में यह केवल सिनेमा घरों तक ही सीमित नहीं है। अर्थात फिल्म अथवा सिनेमा टेलीविजन पर तो घर–घर में देखे ही जा रहे हैं, लैपाटॉप, मोबाईल और टैब ने इसकी सुलभता हांथो तक कर दी है। इंटरनेट संचालित इन अत्याधुनिक साधनों पर कहीं भी सिनेमा व्यक्तिगत और सामूहिक तौर पर देखे जा सकते हैं। सिनेमाई जनसंचार का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य : सिनेमा की परिकल्पना पीटर मार्क रोजे ने अपने एक शोध पत्र 'गतिमान वस्तुओं का दृष्टि पर प्रभाव' में किया। यह शोध पत्र सन 1824 में लंदन में रॉयल सोसाइटी ऑफ आर्ट्स के अधिवेशन में प्रस्तुत किया गया। तब यह किसी ने नहीं सोचा था कि पीटर मार्क रोजे की परिकल्पना एक दिन न केवल वास्तविकता के धरातल पर उतरेगी बल्कि यह लोगों के दिल और दिमाग पर भी छा जाएगी। माइकेल फैरेडे ने पीटर मार्क रोजे की परिकल्पना को सन 1896 में मूर्त रूप प्रदान किया। इस प्रकार सिनेमैटोग्राफी कला का अविष्कार हुआ। इस कला को ऑगस्ट मेरी लुइस निकोलस और लुइस जीन लुमिएर ने गति प्रदान की। इन्होंने ही सर्वप्रथम पेरिस में पहले चलचित्र का प्रदर्शन किया। चूकि सिनेमा के तकनीकी विकास का यह आरंभिक और प्रथम चरण था इसलिए उस समय छोटे और स्थिर दृश्यों पर आधारित फिल्में ही निर्मित और प्रदर्शित की गई। इन फिल्मों के विषय रोजमर्रा की जिंदगी पर आधारित होते थे। भारत में भी सर्वप्रथम सिनेमा का प्रदर्शन मुंबई में 7 जुलाई 1896 को लुइस बंधुओं ने ही किया। इसके बाद विदेशी फिल्मों के प्रदर्शन का दौर चलता रहा। सिनेमा के आकर्षण से भारतीय भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाए। ''1897 में हरिश्चंद्र सखाराव भटवडेकर उर्फ सावेदादा ने अपने एक अंग्रेज मित्र के सहयोग से बंबई के हैगिंग गार्डन में एक कुश्ती के खेल को कैमरे में कैद किया था, यह भारत में चलचित्र की पहली नींव थी।''[2] भारतीय संदर्भ में फिल्म निर्माण के क्षेत्र में कई लोगों के सफल और असफल प्रयास करने के बाद 3 मई 1913 को दादा साहेब फाल्के ने 'राजा हरिश्चंद्र' का प्रदर्शन करके नया कीर्तिमान स्थापित किया। इस फिल्म को पहली पूर्णतया कथानक आधारित भारतीय फिल्म माना जाता है। यह ध्वनि रहित फिल्म थी। सवाक अथवा ध्वनि समाहित प्रथम फिल्म 'आलमआरा' का प्रदर्शन 14 मार्च 1931 को हुआ। ध्वनि ने सिनेमा को जीवंत बना दिया। सफलता के नित् नए आयाम गढ़नेवाला भारतीय सिनेमा 1937 से रंगीन हो गया। तकनीक के विकास ने सिनेमा के आकर्षण की प्रासंगिकता को बनाए रखा।

सिनेमाई जनसंचार का सामाजिक परिप्रेक्ष्य : सिनेमा के इतिहास का संबंध सामाजिक क्रांति से रहा है। मानव सभ्यता के इतिहास में फिल्म के सकारात्मक भूमिका का योगदान इसके आरंभ से ही देखने को मिलता है। फिल्म में विद्यमान जनसंचार की क्षमता इसके प्रभाव को दर्शाता है। सामाजिक क्रांति में सक्रिय योगदान इसकी सबसे बड़ी उपलब्धी है। ''फिल्मों ने राष्ट्रीय एकता, हरिजनोंद्धार, नारी–जागरण, छूआछूत, सांप्रदायिकता, अन्याय, शोषण, अत्याचार सामंतवाद से लेकर राजनीति, भाषा, भाईचारा जैसे राष्ट्रीय हित के मुद्दों पर जन–जन को आंदोलित किया है। उसे जागृत भी किया है।''[3] सिनेमा के आरंभिक दिनों पर दृष्टिपात करने पर यह ज्ञात होता है कि उस समय फिल्मों के विषय सामाजिक जीवन पर ही आधारित होते थे। यह सिनेमा ही था जिसने एक स्थान के लोगों को दूसरे स्थान अथवा प्रदेश, देश या विदेश के विभिन्न भागों के लोगों के जीवन से परिचित कराया। मनोरंजन की दृष्टि से निर्मित फिल्मों में संदेश भी छुपा होता है। जिसे दर्शक आसानी से ग्रहण कर लेते हैं। आजादी के पूर्व स्वतंत्रता आंदोलन में भी सिनेमा ने जनसंचार की भूमिका का बखूबी निर्वहन किया। ...सिनेमा ने समाज सुधार के महात्मा गांधी के एजेंडे और हृदय परिवर्तन की उनकी धारणा के प्रति ही सरोकार नहीं रखा, बल्कि खुद उनके व्यक्तित्व पर केंद्रित कई फिल्में भी बनी।[4] राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जनांदोलन को बल प्रदान करने के लिए पुणे के पांडुरंग तालगिरी ने 1923–24 में अछूत और अछोतोद्धार नामक दो फिल्मों का निर्माण किया। जैसा कि नाम से ही प्रतीत हो रहा है कि उपरोक्त दोनों फिल्में भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों पर केंद्रित थी। इसका उद्देश्य भारतीय समाज के हासिए पर मौजूद लोगों को मुख्यधारा में शामिल कर राष्ट्रीय एकता को मजबूत करना था। 1936 में निर्मित फिल्मों पर महात्मा गांधी के स्वतंत्रता आंदोलन व विचारधारा का व्यापक असर पड़ा। अछूतकन्या, जयभारत, अमर ज्योति, अमर शहीद, बरोजगार, भारत का लाल, ग्रेजुएट, दलित कुसुम, हमारी बेटियां, हिंदी महिला, परिर्वतन, संगदिल समाज आदि ने तात्कालीन व्यवस्था को परदे पर उकेरा। व्ही शांताराम की सन 1937 में प्रदर्शित फिल्म 'दुनिया न माने' 'कुकु' और अनएक्सपेक्टेड ने समाजोद्धार की क्रांति जगाने में काफी सफल रही।[5] 1937 से 40 के मध्य निर्मित फिल्मों में विद्यापति, बड़ी बहन, मुक्ति, किसानकन्या, मदर इंडिया ने अनेक समस्याओं की तरफ ध्यान आकर्षित किया। साहूकार के नाजायज कर्ज के बोझतले दबे एक किसान परिवार की कहानी पर आधारित 'मदर इंडिया' की लोकप्रियता आज भी किसी परिचय की मोहताज नहीं है।

आजादी के बाद के सिनेमा में नवनिर्माण और सृजन की झलक मिलती है। मेला, बाबूल, नदिया के पार जैसी फिल्मों में मूल्यों की स्थापना की बात अंतर्निहित है। 60 के दशक के बाद भारतीय फिल्मों पर विदेशी वातावरण का प्रभाव देखने को मिलने लगा। भारतीय फिल्मों में भी पश्चिम की तर्ज पर अभिनेत्रियों के अंग प्रदर्शन का दौर शुरू हुआ। इन फिल्मों ने आजाद हिंदुस्तान के लोगों को पश्चिमी वातावरण से परिचित कराया। इन फिल्मों के प्रभावी होने के बावजूद सिनेमा में सामाजिक सरोकार बना रहा। इसी दौर में बैजू बावरा, आनंद मठ, दाग और अनहोनी जैसी फिल्मों का निर्माण हुआ। इस प्रकार हर दौर में औसत और अच्छी फिल्में प्रदर्शित होती रही। सात हिंदुस्तानी, सत्यकाम, सरस्वतीचंद्र, उपकार, राखी, पूरब और पश्चिम जैसी फिल्में 1961 से 70 के दौर में पर्दे पर आईं। लगभग इस प्रकार की फिल्मों ने अनेक विषयों को केंद्र में समाज में संदेश देने का कार्य किया। जैसे पूरब और पश्चिम में भारतीय संस्कृति को अनेक रूपों में प्रदर्शित किया गया है। फिल्म में देशप्रेम, विवाह की मर्यादा, परिवार के आत्मिक संबंध और दौलत व शोहरत के नकारात्मक पहलू को समाहित किया गया है। भारतीय सिनेमा के लिए 1971 से 80 का दौर ग्लैमर का दौर रहा। हांलाकि इस दौर में भी फिल्मों में संदेश दिए जाने की प्रवृत्ति दिखाई देती है। सत्यम शिवम सुंदरम का ग्लैमर दृश्य बेहद चर्चित रहा। लेकिन फिल्म की कहानी एक कुरूप महिला को उसके गुण की सुंदरता के आधार पर समाज में स्थापित करने का संदेश देता है। कुछ ऐसे ही ग्लैमरस आधारित फिल्म राम तेरी गंगा मैली रही। इस फिल्म में भी राजकपूर ने कुछ ऐसे दृश्य डाले हैं जो उस समय सामान्य नहीं मानी जाती थी। लेकिन फिल्म में एक प्रेम कहानी के माध्यम से जिस प्रकार गंगा के वास्तविक स्वरूप का चित्रण किया गया है। वह अपने आप में अनोखा है। फिल्म में गंगा के प्रति नेताओं और उद्योगपतियों की राजनैतिक कुचाल, आम आदमी की बेवशी और पारिवारिक संस्कार को बखूबी दिखाया गया है। 1981 से 90 के मध्य के सिनेमा में क्रांति, कुदरत, लावारिस, नसीब, प्यासा सावन, उमरॉव जान, वक्त की दीवार, बाजार धर्मकांटा, नमक हलाल का नाम आता है। क्रांति ने एकबार पुनः ब्रिटिश हुकूमत की याद ताजा करके देशप्रेम की अलख जगाई। लावारिस और नसीब जैसी फिल्मों में घृणा और प्रेम को बखूबी दिखाया गया। उमरॉव जान और बाजार ने महिलाओं की विभिन्न परिस्थियों में संघर्ष को लोगों के सामने रखा। इन फिल्मों ने भी सामाजिक व्यवस्था के विद्रूप चेहरे को सामने दिखाया। अर्पण, सौतन, तवायफ, नाम, दामुल और घायल जैसी फिल्में भी इसी दौर में प्रदर्शित हुई। लगभग इन सभी फिल्मों ने उस दौर में अपना नाम कमाया। 1991 से 2000 के बीच प्रेम कहानी की फिल्में बॉक्स आफिस पर काफी सफल रही। इन फिल्मों में हिना, साजन, साथी, बोल राधा बोल, दिल आसना है, हीर रांझा, बाजीगर, डर, राजा, बरसात, दिलजले आदि शामिल हैं। एक जैसी कथानक होने के बावजूद इन फिल्मों में नायक– नायिका के पारिवारिक पृष्ठभूमि की विसंगतियों को परदे पर बखूबी उकेरा गया है। इन विसंगतियों में आर्थिक, जातीय, धार्मिक सामाजिक भेदभाव शामिल है। जिससे संघर्ष करते हुए नायक– नायिका एक दूसरे से मिलते हैं अथवा मिलने की कोशिश करते हैं। देखा जाए तो इन फिल्मों में भी कोई न कोई संदेश जरूर छुपा है। बेटा, हम हैं आपके हैं कौन और दिलवाले दुलहनिया ले जाएगें जैसी रिकॉर्डधारी फिल्मों का भी यही दौर था। बेटा और हम हैं कौन में क्रमशः पारिवारिक संघर्ष और संबंधों की जीवंतता को सौम्यता के साथ परदे पर उकेरा गया है। दिलवाले दुलनियां में ले जाएगें भी एक प्रेम कहानी आधारित फिल्म है। इसी दौर में लीक हटकर बनी फिल्म बार्डर ने भी दर्शकों को अपनी ओर खूब आकर्षित किया। भारत–पाकिस्तान युद्ध पर आधारित इस फिल्म ने न केवल सेना के जवानों के प्रति लोगों को संवेदनशील बनाया बल्कि युवाओं को भी सेना में जाने के लिए प्रेरित किया। यह कहना गलत नहीं होगा कि इस फिल्म ने सेना का सम्मान बढ़ा दिया। नई पीढ़ी के युवाओं को देशप्रेम के लिए कुछ कर गुजरने की प्रेरणा इस फिल्म ने बखूबी दिया। इक्कीसवीं सदी के आरंभिक प्रथम दशक में लगान, हासिल, कोई मिल गया, मुन्नाभाई एम. बी. बी. एस. जैसी सुपरहिट फिल्में प्रदर्शित हुई। लगान ने एकबार फिर अंग्रेजी हुकूमत की बर्बरता से लोगों को परिचित कराया। हांलाकि इस फिल्म में प्रेम, सामाजिक भेद–भाव और असंभव कुछ भी नहीं जैसे विषय का भी समावेश है। हासिल ने हिंदी क्षेत्र के विश्वविद्यालयी छात्र राजनीति को प्रेम के माध्यम से परदे पर जीवंत किया। कोई मिल गया ने वैज्ञानिक सोच को दर्शकों के सामने रखा। मुन्नाभाई एम. बी. बी. एस. मानवीय संवेदना बेहतरीन तरीके से दर्शाया गया। ब्लैक फ्राईडे, स्वदेश, चमेली, मर्डर और चरस जैसी फिल्में भी इसी दौर में प्रदर्शित हुई। 2011 से 2016 के मध्य बॉडीगार्ड, सिंघम, एक था टाईगर, धूम 3, कृष 3, पीके, किक, बजरंगी भाईजान, बाजीरॉव मस्तानी, बाहुबली, दंगल, सुलतान, एम. एस. धोनी : द अंटोल्ड स्टोरी, रूस्तम जैसी अनेक फिल्में प्रदर्शित हुई। बॉडीगार्ड प्रेम कहानी के साथ स्वामीभक्ति को दिखाया गया तो सिंघम में प्रेम कहानी के साथ पुलिस की इमानदार छवि को प्रदर्शित किया गया। टाईगर ने दर्शकों के सामने एक जासूस की जिंदगी को रखा। यह फिल्म भी प्रेम पर आधारित थी। धूम 3 और कृष 3 ने भी मनोरंजन के साथ विपरीत परिस्थितियों में भी आगे बढ़ने का संदेश दिया। पीके ने धार्मिक अंधविश्वास पर प्रहार किया। किक और बजरंगी भाईजान ने मानवीय संवेदना को सामने रखा। बॉजीराव मस्तानी ने इतिहास के एक प्रेम कथा से लोगों का परिचय कराया तो बाहुबली ने मनोरंजन के साथ– साथ प्रेम और

विद्वेश के अनेक पहलुओं को दर्शकों के सामने रखा। सुलतान और दंगल ने महिला सशक्तिकरण की दिशा में प्रयास करने के लिए दर्शकों को प्रेरित किया। एम. एस. धोनी ने भारतीय क्रिकेट को नई उंच्चाई पर ले जाने वाले खिलाड़ी महेंद्र सिंह धोनी के संघर्ष को परदे पर जीवंत किया। रूस्तम ने कठिन परिस्थितियों में विवेक से लिए निर्णय के बारे में लोगों को अवगत कराया। ...किसी स्पष्ट सामाजिक–वैचारिक सरोकार से जुड़ी हुई फिल्में हमें एक निष्क्रिय दर्शक की भूमिका में नहीं रहने देतीं। वे हमें अपने समाज और देश–दुनिया के बारे में सोचने के लिए उकसाती हैं। यहां तक की फिल्मों के सामाजिक प्रभाव के बारे में भी सोचने को प्रेरित करती हैं।[6]

निष्कर्ष :

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सिनेमा के माध्यम से जिस प्रकार प्रभावी जनसंचार किया जा सकता है वैसा अन्य माध्यमों से कठिन ही नहीं बल्कि असंभव होगा। क्योंकि सिनेमा देखने के लिए लोग विशेष तौर पर समय निकालकर जाते हैं और सिनेमा देखने के बाद उस पर चर्चा करते हैं। इससे जहां सिनेमा का एक वैचारिक पक्ष सामने आता है वहीं दर्शक एक दूसरे के प्रतिक्रिया से भी अवगत होते हैं। इसप्रकार यह कहा जा सकता है कि वास्तव में सिनेमा ही जनसंचार का सशक्त साधन है।

सुझाव :

- सिनेमा के विषय हमेशा मनोरंजन के साथ–साथ सामाजिक संदेश देने वाला भी होना चाहिए।
- सामाजिक संदेश देने वाली फिल्मों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- नकारात्मक संदेश देने वाले विषयों से परहेज किया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. जैन, रमेश. (2014). मीडिया समग्र : भाग 2. दिल्लीः नेशनल पब्लिशिंग हाउस. पृ. 401.

2. पटेल, रविराज. (अक्टूबर 2012). भारत में सिनेमा का प्रवेश एवं प्रारंभिक गतिविधियां. आजकल. पृ. 10.

3. शर्मा, राधेश्याम. (संपा.). (2012). जनसंचार. पंचकूलाः हरियाणा ग्रंथ अकादमी. पृ. 194.

4. सुमन, सुधीर. (अक्टूबर 2012). हिंदी सिनेमा के सरोकार. आजकल. पृ. 4.

5. झुनझुनवाला, शीला. (2012–13, अक्टूबर–मार्च). हिंदी सिनेमा का इतिहास–1980 तक. समसामयिक सृजन. पृ. 13–17.

6. सुमन, सुधीर. (अक्टूबर 2012). हिंदी सिनेमा के सरोकार. आजकल. पृ. 6.

टिप्पणी :

- कुछ फिल्मों का विश्लेषण अवलोकन पर आधारित है।
- वाक्य की संरचना के आधार पर 'सिनेमा' और 'फिल्म' शब्द का प्रयोग अलग–अलग किया गया है जबकि दोनों शब्दों का अर्थ एक ही है।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com